

नौकरी की किताब
सत्र 11: स्वर्ग में दृश्य, भाग 2
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 11, स्वर्ग में दृश्य, भाग 2 है।

स्वर्ग में दूसरे दृश्य का परिचय [00:23-1:21]

तो अब हम स्वर्ग के दूसरे दृश्य की ओर बढ़ते हैं। अय्यूब ने अपनी सारी संपत्ति, अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, अपने ऊँट, अपने बैल, अपने बेटे-बेटियाँ खो दी हैं। उसके पास जो कुछ भी था वह सब खो गया। और इसलिए फिर से, यहोवा और चुनौती देने वाले के बीच हमारी बातचीत होती है। वहाँ अध्याय 2, श्लोक पाँच में। नहीं, मुझे क्षमा करें, श्लोक तीन। "तब यहोवा ने चुनौती देनेवाले से कहा, 'क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? पृथ्वी पर उसके तुल्य कोई नहीं है; वह खरा और सीधा है,' उसी प्रकार की बातें उसने पहली बार कही थीं। "और वह अभी भी अपनी ईमानदारी बनाए रखता है, भले ही आपने बिना किसी कारण के उसे बर्बाद करने के लिए मुझे उसके खिलाफ उकसाया हो।" ठीक है।

उकसाना [1:21-4:31]

अब मैं उस वाक्यांश पर थोड़ा गौर करना चाहता हूँ। हम हिब्रू में "उकसाना" इस क्रिया के उपयोग को देखना चाहते हैं। यह मूल "सुत" है। और आपमें से जिनके पास थोड़ी हिब्रू है, उनके लिए यह हिफिल रूप है, जो कभी-कभी कारक होता है। लेकिन यहाँ, कभी-कभी, यह किसी अप्रत्यक्ष वस्तु के साथ होता है और कभी-कभी बिना किसी वस्तु के। यहाँ विषय चैलेंजर है। निःसंदेह क्रिया "उकसाना" है। प्रत्यक्ष उद्देश्य यहोवा है "तूने मुझे उकसाया है," और अप्रत्यक्ष उद्देश्य अय्यूब है "उसे नष्ट करने के लिए उसके विरुद्ध।" तो, हमारे पास वाक्य में तीन पक्ष शामिल हैं, चैलेंजर और यहोवा, और अय्यूब

पुराने नियम में तीन अन्य स्थान हैं जो इस तरह के संदर्भ में क्रिया का उपयोग करते हैं। उनमें से एक 1 शमूएल 26:19 में है। वहां विषय यहोवा है; वस्तु शाऊल है; अर्थात् दाऊद शाऊल से बातें करके कहता है, यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध भड़काया है। तो, डेविड अप्रत्यक्ष वस्तु है।

2 शमूएल 24:1 में, यह यहोवा या उसका क्रोध है जो दाऊद को जनगणना कराने के लिए उकसाता है। ठीक है। वह दाऊद को इस्राएल के विरुद्ध भड़का रहा है। तो वहाँ, यहोवा विषय है; डेविड एक प्रत्यक्ष वस्तु है, और इज़राइल एक अप्रत्यक्ष वस्तु है। यिर्मयाह 43 :3 में, बारूक वह विषय है जो यिर्मयाह को भड़काता है, जो इज़राइल के खिलाफ प्रत्यक्ष वस्तु है। मुझे खेद है, यिर्मयाह एक प्रत्यक्ष वस्तु है; इज़राइल अप्रत्यक्ष वस्तु है। तो, हमारे पास अय्यूब 2:3 के अलावा तीन अन्य स्थान हैं, जो इस क्रिया का उपयोग करते हैं और जिसमें यह सेटअप है जिसमें एक विषय और एक प्रत्यक्ष वस्तु और एक अप्रत्यक्ष वस्तु है।

अब, यदि हम उनकी जांच करें, तो हम उपयोग और यह कैसे काम करता है, इसके बारे में कुछ सीख सकते हैं। अप्रत्यक्ष वस्तु के लिए उकसाई गई कार्रवाई हमेशा नकारात्मक होती है। ठीक है? उकसाया गया कार्य हमेशा अप्रत्यक्ष वस्तु के लिए नकारात्मक होता है, हालांकि यह आंतरिक रूप से कोई पापपूर्ण या बुरा कार्य नहीं होता है। आखिरकार, कभी-कभी यहोवा ही भड़काने वाला होता है। तो, यह आंतरिक रूप से पापपूर्ण या बुरा नहीं है। अय्यूब में, एक प्रत्यक्ष वस्तु के रूप में, यहोवा अय्यूब के विरुद्ध कार्रवाई के लिए जवाबदेह है, हालांकि चुनौती देने वाले ने, विषय के रूप में, उसके निर्णय को प्रभावित किया है। एक अप्रत्यक्ष वस्तु के रूप में जॉब को विषय के रूप में चैलेंजर की भूमिका का कोई ज्ञान नहीं है। वह केवल यहोवा की भूमिका को समझता है। वह प्रत्यक्ष वस्तु है। चुनौती देने वाले ने यहोवा को दाऊद के विरुद्ध भड़काया; मुझे क्षमा करें, अय्यूब।

बिना किसी कारण के [हित्रम] [4:31-6:24]

तो, इसका उपयोग 1:9 में किया गया है, जब चैलेंजर ने यह सवाल उठाया कि क्या अय्यूब ने बिना किसी कारण के भगवान की सेवा की, यह *हित्रम शब्द है* "बिना किसी कारण के।" तो, उसने बिना किसी कारण के उसे उकसाया है। तो इसका उपयोग 2:3 में किया जाता है। इसका उपयोग 1:9 में इस बारे में भी किया गया था कि क्या अय्यूब ने बिना किसी कारण के परमेश्वर की सेवा की थी। तो,

क्या अय्यूब बिना किसी कारण के परमेश्वर की सेवा करता है; अब, चुनौती देने वाले ने अकारण ही यहोवा को अय्यूब के विरुद्ध भड़काया है। यह वही हिब्रू शब्द है *हित्रम*। इसका तात्पर्य व्यर्थ में किये गये किसी कार्य से हो सकता है। उदाहरण के लिए, यहजेकेल 6:10 में, या 1 शमूएल 25:31 में अनावश्यक रूप से किया गया कुछ, या यहां तक कि मुआवजे के बिना किया गया कुछ, यिर्मयाह 29:15। और निःसंदेह, अय्यूब 1:9 में यही अर्थ है कि यह बिना मुआवजे के किया गया है। ज्यादातर मामलों में, यह बिना किसी कारण के किए गए किसी कार्य को संदर्भित करता है, अर्थात् अवांछनीय उपचार। और यहां 1 शमूएल 19:5 या 1 राजा 2:31 जैसे अंश होंगे। तो, हमने अपने लिए वह दृश्य तैयार कर लिया है जहां यहोवा द्वारा यह कथन दिया गया है। “तुमने बिना वजह मुझे उसके खिलाफ़ भड़काया है।” अब, वहां हमें पता चलता है कि ईश्वर चुनौती देने वाले पर जिम्मेदारी या दोष नहीं थोप रहा है। चैलेंजर ने उकसाया है, लेकिन यह कोई आंतरिक रूप से बुरी बात नहीं है। लेकिन वही हुआ है। और फिर, अय्यूब को चैलेंजर की भूमिका के बारे में कुछ भी नहीं पता होगा, कुछ भी नहीं। यह बात उसे कभी नहीं बताई गई।

पहले और दूसरे स्वर्गीय दृश्यों के बीच अंतर [6:24-7:18]

तो, इस दूसरे दौर का परिणाम क्या है? इस दूसरे दौर में, हमारे बीच थोड़ा अंतर है। पहले दौर ने सारी सकारात्मक चीजें, समृद्धि छीन लीं। दूसरा दौर एक नकारात्मक जोड़ता है। यहां हमें शारीरिक कष्ट मिलता है। तो, विचार, और यह चैलेंजर द्वारा प्रस्तुत किया गया है, विचार यह है कि, कोई भी तब खड़ा हो सकता है जब वे अपना सारा सामान खो देते हैं, लेकिन जब आप उन्हें दर्द में डालना शुरू करते हैं, तो अब यह दिखाई देने वाला है। और इसलिए, भगवान इसकी भी अनुमति देते हैं। इसलिए, यह दूसरा दौर अलग है क्योंकि इसमें शारीरिक पीड़ा शामिल है। पहला दौर नुकसान और दुःख से जुड़ी मानसिक पीड़ा लेकर आया और दूसरा दौर दर्द से जुड़ी शारीरिक समस्याएं लेकर आया।

सिटी डंप: निष्कासित और बहिष्कृत [7:18-8:18]

अय्यूब को जो त्वचा रोग था, उसके कारण उसे शहर से निकाल दिया गया और बहिष्कृत कर दिया गया। हम वास्तव में इसका चिकित्सीय निदान नहीं दे सकते, लेकिन प्राचीन दुनिया में त्वचा रोग का

इलाज इसी तरह किया जाता था; यह बहिष्कृत होने का कारण है। और इसलिए, उसे शहर से निष्कासित कर दिया गया, और वह उस स्थान पर पहुँच गया जिसे पाठ में राख के ढेर के रूप में संदर्भित किया गया है। यह शहर के कूड़ेदान की तरह है। यह केवल कूड़ा-कचरा नहीं है जो वहाँ फेंका गया था; यह गोबर है जिसे वहाँ फेंक दिया जाता है। नौकरी का अंत शहर के कूड़ेदान में बैठकर होता है। इससे पता चलता है कि वह कितना नीचे गिर गया है।' उसे यहाँ तक कम कर दिया गया है. तो, यह केवल राख ही नहीं है जो इसे खराब बनाती है; वह जिस स्थिति में है उसका वर्णन करने के लिए यह उतना भी बुरा नहीं है।

बयानबाजी की रणनीति [8:18-9:19]

तो, स्वर्ग के इस दूसरे दृश्य की अलंकारिक रणनीति क्या है? यह आश्चर्य करता है कि यदि अय्यूब की वफ़ादारी का एकमात्र उद्देश्य लाभ प्राप्त करना है तो उसके पास ईश्वर को त्यागने का हर अवसर है। फिर, अब उन्हें न सिर्फ़ नुकसान उठाना पड़ा है. उसे दर्द हो रहा है. यह सुनिश्चित करता है कि उसके पास ईश्वर को त्यागने का, यह पता लगाने का हर मौका है कि उसके इरादे वास्तव में क्या हैं। दर्द सहना नुकसान सहने से अलग है। इसलिए, यह दृश्य और बढ़ गया, और अय्यूब की स्थिति और भी बदतर हो गई।

तो, इसी संदर्भ में उसका सामना अपनी पत्नी और अपने तीन दोस्तों से होता है। और हम अगले खंड में उनमें से प्रत्येक की भूमिका और उनके प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं से निपटने जा रहे हैं।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 11, स्वर्ग में दृश्य, भाग 2 है। [9:19]